संरक्षक की कलम से.....

प्रिय पाठकों,

हम सभी जानते हैं आज बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन के चलते हमारे देश के जल संसाधनों की उपलब्धता में निरंतर कमी आ रही है। कई स्थानों पर भूजल का स्तर तेजी से गिरता चला जा रहा है और जलभृतों में संचित जल भी घट रहा है। वैश्विक स्तर पर यदि नजर डालें तो यही दृष्टिगोचर होता है कि आज हमें कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि और कहीं पेयजल की गुणवत्ता तथा जल के संरक्षण आदि भिन्न-भिन्न समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। भूजल के अंधाधुंध दोहन के कारण भूजल स्तर साल-दर-साल गिरता चला जा रहा है। कई स्थानों पर भूजल स्तर सामान्य से बहुत नीचे पहुंच गया है, अगर भूजल दोहन की यही रफ्तार रही तो वह दिन दूर नहीं जब भूजल प्रयोग अत्यंत मंहगा हो जाएगा। विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे विकास के फलस्वरूप हमारे वैज्ञानिक जल के क्षेत्र में नए-नए आविष्कार एंव शोध कार्य कर रहे हैं जिससे कि आने वाले समय में जल संबंधी चुनौतियों का बेहतर ढंग से मुकाबला किया जा सके। आज के समय में जल संसाधन प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। देश के हर नागरिक को जल संरक्षण से जुड़ना होगा। व्यर्थ बहने वाले जल को एकत्र कर उसे जमीन के अन्दर पहुंचाया जाए जिससे भूजल स्तर बढ़ जाए। जल की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। घरेलू एवं सिंचाई जलापूर्ति में भूजल का अहम योगदान है परंतु जिस गति से इन संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है उससे कई स्थानों में भूजल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है और इसमें प्रदूषण बढ़ रहा है।

राजसं जलविज्ञान के क्षेत्र में भारत का अग्रणी संस्थान है। संस्थान तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों की जानकारियों को सामान्य जनमानस तक पहुंचाने के उद्देश्य से पिछले 8-9 वर्षों से तकनीकी पत्रिका ''जल चेतना'' का प्रकाशन कर रहा है। प्रबुद्ध लेखकों की रोचक एवं महत्वपूर्ण रचनाओं के सहयोग से इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है और इसकी हर स्तर पर सराहना की जा रही है। आज हमारे देश में समय और स्थान के अनुसार जल संबंधी समस्याएं भिन्न-भिन्न हैं। इन समस्याओं के समाधानों और उपायों की जानकारी को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य कर रही है हमारी यह पत्रिका ''जल चेतना''। हमें ज्ञात है कि जीवन के इस अति आवश्यक तत्व की सुरक्षा का दायित्व देश के हर नागरिक का है। आज हमें जल के महत्व, उसके संरक्षण तथा बूंद-बूंद के सदुपयोग की जानकारी आम जनता को देने की आवश्यकता है।

मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के लिए वर्षभर हिंदी की भिन्न-भिन्न गतिविधियां आयोजित करता रहता है। हमारा प्रयास यह रहता है कि प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग किया जाए। संस्थान के कार्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के हैं और आमतौर पर यह समझा जाता है कि तकनीकी कार्यों का निःष्पादन हिंदी में कर पाना सहज नहीं है। परंतु प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए इन कार्यों में हिंदी का समुचित प्रयोग करने के प्रयास जारी हैं और इस दिशा में धीरे-धीरे ही सही लेकिन सफलता मिल रही है।

मैं उन समस्त विद्वत लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक तथा महत्वपूर्ण लेख भेजकर इसके प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग दिया है। पत्रिका का संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

शरद जैन

(डॉ. शरद कुमार जैन)